डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

मैला आंचल (फणीश्वर नाथ रेणु)

प्रश्न :- 'मैला आँचल' के आधार पर डा. प्रशान्त का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर :- 'मैला आँचल' एक नायक विहीन उपन्यास है, फिर भी, इस उपन्यास में और किसी और पात्र की अपेक्षा प्रशान्त का चरित्र प्रमुखता से उभरकर आया है। इसलिए वह इस उपन्यास के नायक के योग्य है। डॉ. प्रशान्त पेशे से एक डाक्टर है और उसके जीवन का उद्देश्य है गरीबों की सेवा करना। जब वह पहली बार मेरीगंज आता है तो गाँव के लोग उसकी जाति के बारे में पूछते हैं। वह अपनी जाति डाक्टर बताता है। जब उससे पूछा जाता है कि वह बिहारी है या बंगाली? तो उसका उत्तर होता है 'हिन्दुस्तानी'। उसका यह उत्तर सुनकर लोग समझते हैं कि यह डाक्टर अपनी जाति छुपाना चाहता है।

प्रशांत अज्ञात कुलशील है। उसकी माँ एक मिट्टी की हाण्डी में डालकर उसे उमड़ती हुयी कोसी मैया की गोद में सौंप दिया था। नेपाल के प्रसिद्ध उपाध्याय परिवार ने उसको नदी से निकालकर उसके प्राण बचाए थे। एक दिन उपाध्याय जी बाढ़ रिलिफ की सहायता के लिए नाव लेकर निकले थे। झाऊ की झाड़ी के पास उन्हें एक मिट्टी की हाँडी मिली। उनकी स्त्री ने पास जाकर देखा तो उसमें नवजात शिशु मिला। वहीं से एक माँ ने उसे थपकी देना शुरू किया। प्रशान्त के जन्म की बस यही कहानी है।

आदर्श आश्रम में एक युवती रहती थी। नाम था उसका स्नेहमयी। डा० अनिल कुमार बनर्जी जो उसके पति थे, उसका त्याग कर एक नेपालिन युवती से शादी कर ली थी। उपाध्याय परिवार ने उसी के गोद में शिशु प्रशांत को डाल दिया। उस दिन से प्रशांत उसका इकलौता बेटा हो गया। कुछ दिनों बाद उपाध्याय दम्पति नेपाल में जाकर बस गए और वहीं एक आदर्श विद्यालय की स्थापना कर ली। पीछे स्नेहमयी भी उसी स्कूल में सिलाई-कटाई की शिक्षिका हो गयी। इस प्रकार के प्रशान्त के व्यक्तित्व पर स्नेहमयी और उपाध्याय परिवार की कृपा रही।

P.T.O

माँ स्नेहमयी की इच्छा थी बेटा डाक्टर बने। इसलिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आई० एस० सी पास करने के बाद उसका दाखिला पटना मेडिकल कॉलेज में हुआ। किंतु स्नेहमयी उसे डाक्टर बनते नहीं देख पायी, एक दिन उसकी मृत्यु हो गयी।

उस समय देश में आजादी का आंदोलन छिड़ा हुआ था। उपाध्याय परिवार के सम्बद्ध होने के कारण डा० प्रशान्त को भी नजरबंद कर दिया गया। जेल में विभिन्न दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में आने का उसे अवसर मिला। सभी दल के लोग उसे प्यार करते थे। सन 1946 ई में कांग्रेसी मंत्रिमंडल का गठन हुआ। एक दिन हेल्थ मिनिस्टर के बंगले पर वह पहुँचा। वह पूर्णिया में गाँव में रहकर कालाजार पर रिसर्च करना चाहता था। मंत्री जी से उसने सहायता माँगी। मंत्रीजी ने कहा तुम्हें आगे की पढ़ाई के लिए तुम्हें विदेश भेज रही है। प्रशान्त ने विदेश जाने से साफ इन्कार कर दिया और अपनी जिद पर कायम रहा। हारकर मिनिस्टर साहब को प्रशान्त की बात माननी पड़ी। इसके लिए उसके साथियों ने उसका उपहास भी उड़ाया किंतु डॉ प्रशान्त अपनी कथनी और करनी में विश्वास करता था, इसलिए अपने दोस्तों की बातों पर उसने जरा भी ध्यान नहीं दिया।

डा० प्रशान्त मलेरिया और कालाजार पर रिसर्च करना चाहते थे। ग्रामीणों की सेवा करने में उसे सच्चा सुख मिलता था। डाक्टर गाँव के मरीजों को ठीक करने के लिए दवा के अतिरिक्त अन्य उपाय से भी काम लेता है, जैसे कमला को जब दौरा पड़ता है तो उसे वह रेडियो से विवाह का गीत सुना देता है। डा० प्रशान्त हर समय रोगी को देखने के लिए तैयार रहता है। किसी के हाथ-पाँव अकड़ रहे हैं, किसी का पेशाब बंद है। गाँव हैजा फैल गया है। डाक्टर हर समय मरीज के लिए तैयार है। गाँव को हैजा से बचाने के लिए वह गाँव के तहसीलदार, मुखिया एवं कांग्रेसी कार्यकर्ताओं हर किसी से वह सहायता लेता है। घर-घर में डाक्टर की प्रशंसा हो रही है। न जाने गाँव के कितने लोगों की उसने जान बचाई है। इधर कमला की तबियत ज्यादा ही बिगड़ गयी है, डाक्टर को जैसे ही इसका पता चलता है वह दौड़ा दौड़ा आता है। डाक्टर के इलाज से कमला की सेहत सुधर जाती है।

डा० प्रशांत को सौन्दर्य की सच्ची [illegible]

वह दिन-रात प्रयोगशाला में बैठा नए-नए तरह की प्रयोग करता रहता है। उसका एक ही लक्ष्य है कालाजार और मलेरिया का जड़ से उन्मूलन कर देना। वह लोककल्याण चाहता है। बच्चे-बूढ़े जवान को बचाना चाहता है। यही कारण है कि उसके शोध से उसे दुनियां भर में प्रशंसा मिलती। मेडिकल गजट में उसके शोध प्रकाशित किए जाते हैं। उन्हें शाबाशी मिलती है।

डा० प्रशान्त एक आदर्श प्रेमी भी है। वह तहसीलदार के बेटी कमला से मन-ही मन प्रेम भी करता है। कमला की बीमारी का इलाज करते-करते वह कब उससे प्रेम करने लगा, यह भी उसे पता नहीं। किंतु कमली की मीठी-मीठी बातें उसे अच्छी लगती है। कमली से मिलने की पूर्व उसके दिल में किसी भी स्त्री को प्रेमिका के रूप में देखने की इच्छा उसके मन में न थी, किंतु जब कमली उसके जीवन में आती है तब उसे जीवन जीने का अहसास होता है। कमली से निकटता का आभास उसे तब होता है जब कमली गर्भवती हो जाती है। किंतु इसी बीच डाक्टर प्रशांत की गिरफ्तारी हो जाती है। उसे कांग्रेस सेक्रेटरी छोटे लाल कम्युनिस्ट होने के संदेह में जेल भिजवा देते हैं। पर वहाँ भी डाक्टर प्रशांत अपने कर्तव्य को नहीं भूलता। जेल से आने के बाद तहसीलदार विश्वनाथ प्रशांत को अपने दामाद के रूप में अपना लेता है डाक्टर भी कमली को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेता है।

इस प्रकार डाक्टर प्रशांत का चरित्र एक आदर्श नागरिक है। उसका व्यक्तित्व राष्ट्रीय और मानवीयता से ओत-प्रोत है। मेरीगंज में वहाँ की मिट्टी, उसमें रहने वाले लोग और उनके रीति-रिवाजों से वह इस प्रकार घुल-मिल जाता है कि कहना कठिन है कि मेरीगंज गाँव की जिन्दगी को नहीं जी रहा है। वह मेरीगंज गाँव को स्वेच्छा से अपनाता है और अंत में यही कहता है – "यहीं इसी गाँव में मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ।" वास्तव में उसका लक्ष्य है ग्रामीणों की बीमारी, गरीबी अशिक्षा और लड़ाई-झगड़े से दूर, उनके जीवन में जीवन के प्रति आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित करना।

P.G. Semester III
CC - IX
'Maila Anchal'